सिवान-बिहार। पिताश्री ब्रह्मा के स्मृति दिवस पर पुष्प समर्पित करने के पश्चात् प्रो. डॉक्टर अशोक सिंह, ब्र.कु.सुधा तथा अन्य।

चरौंदा। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट टूर्नामेंट के अवसर पर बॉडी बिल्डिंग साउथ एशिया के विनय पाण्डेय को सम्मानित करते हुए ब्र.कु.शिवानी व ब्र.कु.रवि बहन। साथ हैं प्रताप सिंह ठाकुर।

दल्ली-राजहरा (छ.ग.)। बालोद विधायक भैय्या लाल सिन्हा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पूर्णिमा। साथ हैं राजहरा विधायक बहन अनिला भेड़िया और गुण्डरदेही विधायक राजेन्द्र कुमार राय।

झज्जर-हरियाणा। राष्ट्रीय एकता शिविर के सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों को सम्मानित करते हुए ब्र.कु.भावना, कोऑर्डिनेटर पूनम वर्मा तथा अन्य।

राजकोट-गांधीग्राम। जेड एण्ड ब्लू के कर्मचारियों को स्किल मैनेजमेंट का कोर्स करवाने के बाद ग्रुप फोटो में ब्र.कु.इशिता, ब्र.कु.नैना तथा अन्य।

राजगढ़-म.प्र.। ईश्वर अनुभूति शिविर में आनन्द महोत्सव का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए भा.ज.पा. जिलाध्यक्ष रघुनन्दन शर्मा,एस.डी.ओ. पी.डबल्यू.डी, ब्र.कु.मधु, ब्र.कु.लक्ष्मी एवं ब्र.कु.विजयलक्ष्मी।

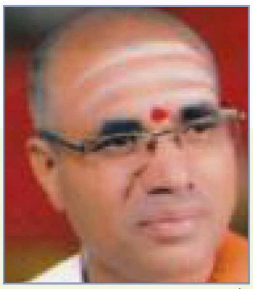

अद्भुत अनुभव इतनी आकर्षक थी वो तस्वीर

-पूज्य श्री नारायण सरनारु, पीठाध्यक्ष, अंबादर्शन पीठ, वेदशाहती, गोकाक

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर मैं मुख्य अतिथि के रूप में बेलगाम के गोकाक सेन्टर पर पहुँचा। वहाँ जब मैंने दादी प्रकाशमणि जी की तस्वीर देखी तो देखते ही मैंने उन्हें नमस्कार किया। मैं उन्हें जानता नहीं था पर ऐसा लगा कि वो उदारता एवं दयालुता से परिपूर्ण परोपकारी प्रशासिका हैं। वह पवित्र ऊर्जा से भरी हुई निर्माणचित्त आत्मा थीं। उनका जीवन हर एक आत्मा के लिए महान आदर्श है। उस तस्वीर ने मुझे बहुत आकर्षित किया पर उस समय मैं यह नहीं जानता था कि वो कौन हैं? मुझे लगता है कि वो दादी जी का प्रकाशमान चेहरा ही मेरे यहाँ आने का कारण बना। महान आत्माएं सदैव दैवी ऊर्जा प्रवाहित करती रहती हैं। मैं समझता हूं आज भी वह महान आत्मा हमें आगे बढ़ाने का अपना कार्य कर रही है। मुझे उनके चेहरे पर सत्यता दिखाई दी। कुछ समय के बाद मुझे पता चला कि वो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी संस्था की प्रशासिका हैं।

उस पल ने मुझे अन्दर तक छू लिया

बाबा मिलन का मेरा अनुभव बहुत ही आनंददायक रहा। ऐसा वातावरण और इतना भव्य समारोह मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था। वो पल बहुत ही सुन्दर था जब मैंने उस अदृश्य शक्ति का अनुभव किया। मेरी मन और बुद्धि एकाग्र हो गयी थी। सम्पूर्ण वातावरण दिव्य शक्ति से भरा हुआ था जहाँ नकारात्मक ऊर्जा के लिए कोई स्थान नहीं था। एक बात और मैं बताना चाहूंगा कि मैं दिल की बीमारी से भी गुजर रहा हूं परंतु अब मेरा हृदय पूरी तरह महान ऊर्जा से भर गया है और मुझे महसूस होता है कि मैं अपने जीवन में कुछ भी कर सकता हूं और समाज को आगे बढ़ाने का कार्य भी कर सकता हूं।

मैं ब्रह्माकुमारी बहनों को नमन करता हूं जो पवित्रता की देवियां हैं क्योंकि मैंने जाना है कि पवित्रता ही श्रेष्ठ संसार की नीव है। आज विश्व इस प्रकार की शिक्षा के अभाव से ग्रसित है जिस कारण आज शांति, पवित्रता, प्रेम आदि समाप्त होते जा रहे हैं। मैं कहना चाहूंगा कि किसी भी प्रकार की परिस्थितियों एवं रुकावटों की परवाह न करते हुए अपने चरित्र की रक्षा करनी चाहिए। सदा शिव बाबा की याद में रहें। मैं इस मिलन से बहुत प्रसन्न हूं, इसे मैं कभी भुला नहीं सकता। मैंने निर्णय लिया है कि मैं इस ज्ञान को धारण कर अपने अनुयायियों सहित पूरे विश्व में फैलाऊंगा।

अब मैं इस संस्था का नियमित विद्यार्थी बनना चाहता हूं, परमात्मा के महावाक्य जो मुरली है वो सुनना चाहता हूं। मुरली ज्ञान का अमृत है जो परमपिता परमात्मा हमें दे रहा है। मैंने जाना कि जो भगवद्गीता मैंने पढ़ी और जो परमात्मा सुना रहा है उसमें अन्तर है। मैं यह जानकर बहुत खुश हुआ कि कृष्ण कौन है। संस्कृत शब्द कृष्णा का अर्थ है पवित्र संकल्प। परमात्मा के सिवाय ऐसा ज्ञान कोई मनुष्य नहीं दे सकता। यहाँ आने के बाद मेरा सोमनाथ जाने का कार्यक्रम था क्योंकि वो एक ऐतिहासिक स्थल है परंतु जब मैंने माऊंट आबू के चार धाम बाबा की कुटिया, बाबा का कमरा, शांति स्तंभ तथा हिस्ट्री हॉल की यात्रा की तो मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे जीवन की चार धाम यात्रा पूरी हो गयी है अब और किसी मंदिर या किसी और स्थान पर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। आज हम दुनिया के कोने-कोने की खबरें सुनते रहते हैं सभी तरह की ज्ञान की बातें भी सुनते हैं तो जब हम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में मिलने वाले ज्ञान और यहाँ के वातावरण की तुलना उससे करते हैं तो लगता है कि बाकि सब कुछ अभी कुछ ही समय में लुप्त होने वाला है। यह ज्ञान महानतम है परंतु यह सब हम अपनी ज्ञान की तीसरी आँख से ही देख सकते हैं वरना इन बातों को समझ पाना संभव नहीं है।

इच्छाएं कम तो समस्याएं कम

यहाँ आने से पहले मुझे थोड़ा क्रोध आता था। हालांकि मेरा क्रोध इतना बुरा नहीं था परंतु इस अलौकिक वातावरण में आने के बाद अब मेरा क्रोध बिल्कुल ही समाप्त हो गया है। आज दुनिया में ज्ञान के अभाव में, सच्चे प्यार के अभाव में, अच्छे सम्बन्धों के अभाव में, सही जीवन प्रणाली के अभाव में और गृहस्थ आश्रम में सुधार के अभाव में ये आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति सन्यासी बन जाए। आज आवश्यकता है शुद्ध एवं पवित्र ऊर्जा प्रवाहित करने की जिससे सारा विश्व परिवर्तित हो जाए।

आज अत्यधिक इच्छाओं के कारण व्यक्ति विश्व में बहुत सारी समस्याओं से ग्रसित है, यदि वह अपनी उन इच्छाओं को कम कर दे तो हर समस्या का समाधान स्वत: ही हो जाएगा और यह श्रेष्ठ ज्ञान हमें इस संस्था द्वारा ही प्राप्त होता है।

'आत्मा' शब्द ने परमात्मा से जोड़ा

-मृदुल सागर, पटना

मैं काफी समय से परमात्मा की तलाश में थी। मैंने मुस्लिम धर्म में सुना था कि प्रभु निराकार है, तो मैं सोचती थी कि यदि वो निराकार है तो उसने वो किताब 'कुरान' दी कैसे। अगर वो निराकार है तो दिखता कैसा है और उसने बात कैसे की होगी? मुझे आध्यात्मिकता बहुत पसंद थी इसी कारण मैं रामकृष्ण मिशन से भी जुड़ी हुई थी।

मैंने एक दिन आस्था चैनल पर प्रवचनों द्वारा गीता के बारे में जानना चाहा। दो-चार दिन देखने के बाद मैंने उस चैनल पर एक सफेद वस्त्रधारी महिला को बैठे हुए देखा, पहले तो मुझे ये अटपटा सा लगा और मैंने इसे देखना व सुनना नहीं चाहा। लेकिन फिर मैंने उसके मुख से एक शब्द सुना 'आत्मा'। इस शब्द ने मुझे बहुत आकर्षित किया और वो ज्ञान मुझे बहुत लॉजिकल लगा कि टेलीपैथी द्वारा जब आत्मा का आत्मा के साथ कनेक्शन हो सकता है तो क्या हमारा परमात्मा के साथ कनेक्शन नहीं हो सकता। वो भी आत्मा है और हम भी आत्मा हैं, फर्क सिर्फ इतना है कि वो परम आत्मा है। बस हमारी तरह शरीर में नहीं आ सकता।

तब मुझे लगा कि अगर हम भगवान से बात कर सकते हैं तो मैं भी बात करना चाहूंगी। उसके बाद मैं शिवानी बहन का कार्यक्रम टी.वी. पर देख उसे प्रैक्टिकल में करने लगी और इसके अभ्यास से मुझे आत्मा का बॉडी के साथ डिटैचमेंट अनुभव होने लगा। तब मैंने महसूस किया कि यही सच है, फिर जब मैं परमात्मा से बातचीत करती तो वो मुझे उसी रूप में दिख जाता। मैंने टी.वी. द्वारा ही ये सब किया और मेडिटेशन करने का तरीका सीखा कि अमृतवेले किस प्रकार भगवान से बात करना है। अब मुझे पूरा विश्वास हो चुका था कि मेरा शिवबाबा ही वो परमात्मा है। मैं रात को सोने से पूर्व शिवबाबा से कह देती कि, सुबह 4 बजे मुझे अमृतवेले उठा देना तो मैं क्या देखती कि सुबह एक ज्योति सी आती, मुझे टच करती और मैं उठ जाती। उन दिनों मुझे कोई भी प्रॉबलम आती तो मैं बाबा को याद करती और वो प्रॉबलम सॉल्व हो जाती तो मैं अनुभव करती कि कैसे वो अपने बच्चों की मदद करता है। मैं 2010 में बाबा से मिलने आई, उन्हें देखकर मुझे लाईट ही लाईट की अनुभूति हुई। मैं महसूस कर रही थी कि जिसे हम ढूंढ़ रहे थे, आज वो मेरे सामने हैं और मैं उनकी बातें सुन रही हूं। यहां आकर मुझे यही लगा कि यही मेरा

परिवार है और यही मेरा घर है और मुझे अपनी जिंदगी, अपना समय इसमें ही देना चाहिए क्योंकि समय बहुत कम है इसलिए जो करना है अभी करना है।

जब मैं इस ज्ञान में आई तब मैंने सात दिन का कोर्स किया। तब तक पापा ने मुझे इसके लिए कभी नहीं रोका और न कुछ कहा, लेकिन कोर्स के बाद कहने लगे कि सात दिन हो गये हैं अब सेंटर पर जाकर क्या करना है। थोड़ी समस्यायें आने लगीं। फिर मैं चुपके से कॉलेज के बहाने सेंटर पर जाने लगी। फिर धीरे-धीरे पापा भी मोल्ड होने लगे क्योंकि मैं बाबा को याद करती और बाबा की शक्ति काम करती थी। अभी मैं पटना सेवाकेन्द्र पर तीन मास से अपनी सेवायें दे रही हूं। घर और सेवा दोनों का बैलेंस रखती हूं। बाकि मेरी इच्छा है कि मेरा जीवन ईश्वरीय सेवाओं में ही गुज़रे।